मूंग

बीज एवं बुवाई : बुवाई के समय का फसल की उपज पर बहुत प्रभाव पड़ता है। मूंग की बुवाई 15 जुलाई तक कर देनी चाहिये। देरी से वर्षा होने पर शीघ्र पकने वाली किस्मों की बुवाई 30 जुलाई तक की जा सकती है। बीज स्वस्थ एवं अच्छी गुणवत्ता वाला होना चाहिये तथा उपचारित बीज बुवाई के काम लेना चाहिये। इसके अतिरिक्त बीज 600 ग्राम राइजोबियम कल्चर को एक लीटर पानी में 250 ग्राम गुड़ के साथ गर्म कर ठंडा होने पर उपचारित कर छाया में सुखा लेना चाहिये तथा बुवाई कर देनी चाहिये।

बुवाई कतारों में करनी चाहिये। अच्छी उपज के लिये स्वस्थ, रोग–कीट रहित बीज का चयनकर 6–8 मिली ट्राइकोडरमा तरल से प्रति किलो बीज को उपचारित कर बुवाई करनी चाहिये। कतारों के बीच की दूरी 60 से.मी. तथा पौधे से पौधे की दूरी 30 सेन्टीमीटर उचित होती है।

खाद एवं उर्वरक

दलहनी फसल होने के कारण मूंग को कम नाइट्रोजन की आवश्यकता होती है। अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए कम से कम 5 टन गोबर की खाद या कम्पोस्ट खाद बुवाई से 15–20 दिन पहले खेत में अच्छी प्रकार मिला देना चाहिये तथा प्रतिवर्ष एक बार अवश्य प्रयोग करनी चाहिये। अन्तिम जुताई के समय खेत में 350 से 400 किलो नीम खल प्रति हैक्टेयर की दर से भूमि में बुवाई से पूर्व मिला देनी चाहिये।

खरपतवार नियंत्रण

मूंग की फसल को खरपतवारों से मुक्त रखने के लिए कम से कम दो बार निराई गुड़ाई की आवश्यकता होती है। प्रथम गुड़ाई बुवाई के 15 दिन बाद और दूसरी 30 से 40 दिन बाद करनी चाहिये।

कीट एवं रोग नियंत्रण

रोग–कीट नियंत्रण के लिये निम्न उपायों का समन्वित प्रयोग करना चाहिये :

1. स्वस्थ, रोग–कीट रहित बीज का चयन कर 6–8 मिली ट्राइकोडरमा तरल से प्रति किलो बीज को उपचारित कर बुवाई करनी चाहिये।
2. अच्छी पकी हुई जैविक खाद का प्रयोग 5.0 टन प्रति हैक्टेयर की दर से भूमि तैयारी के समय करना चाहिये।
3. खेत की बाड़ व बीच में पंक्तियों में कई प्रकार के फूलदार वृक्ष–झाड़ी लगाने चाहिये जिससे फसल के लिए लाभकारी कीटों को आश्रय व भोजन

मिलता रहे। खेत की बाड़ पर कुछ वृक्ष नीम के भी लगाने चाहिये ताकि जैविक कीट नियंत्रण बनाने हेतु निम्बोली मिल सके।

4. नीम आधारित जैविक कीट नियंत्रक घोल का छिड़काव सायंकाल ही करना चाहिये।

कातरा :-

कातरा का प्रकोप विशेष रूप से दलहनी फसलों में बहुत होता है। इस कीट की लट पौधों को आरम्भिक अवस्था में काट कर बहुत नुकसान पहुंचाती है। इसके नियंत्रण हेतु खेत के आस पास कचरा नहीं रहना चाहिये। कातरे की लटों पर राख 20–25 किलो मात्र प्रति हैक्टेयर की दर से भुरकाव कर देनी चाहिये।

मोयला, सफेद मक्खी एवं हरा तेला :-

ये सभी कीट मूंग की फसल को बहुत नुकसान पहुंचाते हैं। इसकी रोकथाम के लिए नीम तेल (300 पी.पी.एम.) का 15 मि.ली. प्रति 1 लीटर पानी की दर से मिलाकर छिड़काव करना चाहिये। इनकी रोकथाम के लिए आवश्यकतानुसार दोबारा छिड़काव किया जा सकता है।

फसल चक्र :-

अच्छी पैदावार प्राप्त करने एवं भूमि की उर्वरा शक्ति बनाये रखने हेतु उचित फसल चक्र आवश्यक है। वर्षा आधारित खेती के मूंग–बाजरा तथा सिंचित क्षेत्रों में मूंग–गेंहू/जीरा/सरसों फसलचक्र अपनाना चाहिये।

बीज उत्पादन

मूंग के बीज उत्पादन हेतु ऐसे खेत चुनने चाहिये जिनमें पिछले मौसम में मूंग नहीं उगाया गया हो। भूमि की अच्छी तैयारी, उचित खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग, खरपतवार, कीड़े एवं बीमारियों के नियंत्रण के साथ साथ समय समय पर अवांछनीय पौधों को निकालते रहना चाहिये तथा दाना निकालकर ग्रेडिंग कर लेना चाहिये। बीज में नमी 8–9 प्रतिशत से अधिक नहीं होनी चाहिये। बीज में 20 मिली सरसों का तेल प्रति किलोग्राम बीज में मिलाकर सूखे और ठण्ड़े स्थान में रख देना चाहिये। इस प्रकार पैदा किये बीज को बुवाई के लिये प्रयोग किया जा सकता है।

कटाई एवं उपज

मूंग की फलियां जब काली पड़ने लगें तथा पौधा सूख जाये तो फसल की कटाई कर लेनी चाहिये। अधिक सूखने पर फलियां चिटकने का डर रहता है। फलियों से बीज को थ्रैसर द्वारा अलग कर लिया जाता है।

उचित विधियों के प्रयोग द्वारा खेती करने पर मूंग की 12–16 क्विंटल प्रति हैक्टेयर वर्षा आधारित फसल द्वारा उपज प्राप्त हो जाती है।

प्रमाणीकरण

जैविक उत्पादन को उपभोक्ता व बाजार का विश्वास प्राप्त करने के लिए इसको प्रमाणित कराने की आवश्यकता होती है। इसके लिए भारत सरकार से मान्यता प्राप्त किसी संस्था से पंजीकरण कराना चाहिये। सब कुछ सुचारू रूप से नियमानुसार होने पर तीन वर्ष पूरे होने पर जैविक प्रमाणपत्र मिल जाता है जिसके आधार पर प्रमाणित जैविक उत्पाद का विक्रय किया जा सकता है। जैविक प्रमाणीकरण करवाने हेतु निम्नलिखित सरकारी संस्थान से सम्पर्क किया जा सकता है।

राजस्थान जैविक प्रमाणीकरण संस्था, तृतीय तल, पंत कृषि भवन, जनपथ, जयपुर–302 005

शोध-प्रसार

केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान, संस्थान जोधपुर में एक प्रमाणित आदर्श जैविक खेत (फार्म) की स्थापना की गयी है जहां पर जैविक खेती पर अनुसंधान जारी है तथा कृषकों और कृषि अधिकारियों के लिये प्रशिक्षण की व्यवस्था भी है। ■